वेदों की खुशबू ओ३म् वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 94	Year 11	Volume 01	December 2020 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 150

दूर अज्ञान के हों अन्धेरे, तू हमें ज्ञान की रोशनी दे।

दूर अज्ञान के हों अन्धेरे,

तू हमें ज्ञान की रोशनी दे।

हर बुराई से बचते रहें हम,

जितनी भी दे भली जिन्दगी दे।।

गुलजार द्वारा लिखी ये पक्तियां धर्म का निचोड़ है।

आज्ञान को दूर करने की प्रार्थना इस लिये की गई है क्योकि अज्ञान दुख का मूल कारण है। ज्ञान की रोशनी देने की इस लिये प्रार्थना की गई है क्योकि ज्ञान सुख का मूल कारण है। ज्ञान का सीधा अर्थ है जो पदार्थ जैसा है उसे वैसा ही जानना। इसी तरह अज्ञान वह है जो कि हमें जो पदार्थ जैसा है उसे वैसा ही न जानने दे। यह अज्ञान ही होता है जिसके कारण हम ढोंगी बाबो को भगवान समझने लगते हैं। इसी तरह ज्ञान ही हमें ईश्वर के ठीक रूप को बताकर धोखे फरेंव से बचाता है। मिथ्या ज्ञान का दूर होना ही दुख का निवारण है। It is rightly said , there are no eyes that see like knowledge.

उपनिषद में एक कथानक आता है जब याज्ञावलक्य सन्यास आश्रम के प्रति प्रवृत होकर अपनी पत्नियों मैत्रेयी व कात्यायनी के बीच अपनी सम्पूर्ण सम्पति का विभाग कर देते हैं तो मैत्रेयी याज्ञावलक्य से पूछती है–––––क्या धन मुक्ति का साधन है। याज्ञावलक्य कहते हैं–––धन मुक्ति का साधन तो नहीं लेकिन तुम अपना जीवन सुख पूर्वक यापन कर सकोगी। इस पर मैत्रेयी कहती

Contact:
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2018-2021

है–––––यह धन तो क्या यह सारा संसार भी मुझे मिल जाये तब भी मैं अमर नहो हो सकूंगी। मुझे तो जो ज्ञान आपके पास है वही चाहिये। आशय यह है कि ज्ञान मनुष्य की सब से बड़ी शक्ति और सब से बड़ा गहना है।

परन्तु आज धर्म कर्मकाण्ड बन कर रह गया है। बडे बड़े मन्दिर, गुरद्वारे खडे करना ही धर्म को बढ़ाने का साधन माने जा रहे हैं। परन्तु क्या इस से धर्म, जो की गुलजार की दो पक्तिया कह रही हैं, उसका प्रचार हो रहा है। शायद नहीं जैसे कि निम्न घटना ब्यान कर रही है।

पुरशोतम नायडू सरकारी कालेज में कैमिस्टरी के प्रोफैसर हैं व उनकी पत्नि पदमाजा आई टी आई के लिये विद्यार्थियों को तैयार करने के लिये एक संस्था चलाती है। कहने का अर्थ यह है कि दोनो ही बहुत पढ़े लिखे हैं। परन्तु उन दोनो ने जो हरकत की वह न केवल मानवता को शर्मिदा करती है बल्कि यह बताती है कि धर्म के नाम पर हम कैसे घिनोने काम कर सकते है। उन्होने अपनी 27 वर्ष व 22 साल की दो पुत्रियों को कलि युग से सत्य युग में लाने के लिये, उन की जान ले ली व मार डाला।

6 मार्च को आर्य समाज के संस्थापक और महान समाज सुधारक सन्यासी महर्षी स्वामी दयानन्द का जन्म दिवस था। उनके जीवन का उदेश्य था सत्य तक पहुंचना और उस सत्य को लोगों तक पहुंचाना अर्थात ज्ञान का प्रसार ताकी लोग नाना प्रकार के दुखों से छुटकारा पा कर आनन्द का जीवन जीयें। ज्ञान का दूसरा नाम सत्य भी है। इसी सत्य को लोगों तक पहुंचाने के लिये उन्होने आर्य समाज की स्थापना की व उसके उद्देदशें को बताने के लिये आर्य समाज के 10 नियम बनाये।

निम्न दो नियम ज्ञान को लोगों तक पहुंचाने के लिये आर्य समाज की कटिबधता को दर्शा रहे हैं

1. सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सदैव तैयार रहें

   One should always be ready/ inclined to embrace truth and divorce what is not truth.

2. अविद्या अर्थात अज्ञान को खत्म करें, और विद्या, ज्ञान का प्रसार करें

   It should be our foremost duty to dispel ignorance of those who suffer because of ignorance and they should be given the most valuable gift of knowledge.

✪☆✪

माता पिता ईश्वर के बाद सब से पूजनिय है।

मनमोहन आर्य

हमारे सभी शास्त्रों में माता पिता के सन्तानों पर ऋणों व उनकी सेवा सुश्रुषा करने की प्रेरणा की गई है। मनुस्मृति में कहा गया है कि दस उपाध्यायों से एक आचार्य, सौ आचार्यों की अपेक्षा एक पिता और हजार पिताओं की अपेक्षा एक माता का गौरवअधिक है।

वाल्मीकि रामायण में रामचन्द्र जी लक्ष्मणको कहते हैं– 'अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।'अर्थात् हे लक्ष्मण! मुझे सोने की लंका बिल्कुल पसन्द नहीं है, मेरे लिए तो जन्म देने वाला जननी माता और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है।

महाभारत का यक्ष–युधिष्ठिर संवाद में यक्ष ने युधिष्ठिर से प्रश्न किया कि पृथ्वी से भारी क्या है? आकाश से भी ऊंचा क्या है? इसके उत्तर में युधिष्ठिर जी ने कहा कि माता पृथ्वी से भी भारी है, पिता आकाश से भी ऊंचा है। महाभारत में एक स्थान पर यह भी कहा गया है कि 'नास्ति मातृसमो गुरुः' अर्थात् माता के समान दूसरा कोई गुरु नहींहै।

सत्यार्थप्रकाश में ऋषि दयानन्द जी ने लिखा है कि माता, पिता और आचार्य देवता होते हैं, क्योंकि इन्हीं के धार्मिक व विद्वान होने से सन्तान का सबसे अधिक उपकार होता है।

रामायण के वन गमन के प्रसंग में राम जी की पितृभक्ति का ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया गया है जैसा विश्व के इतिहास में दूसरा नहीं है। राम ने माता कैकेयी को कहा था कि मेरे पिता दशरथ यदि मुझे जलती चिता में प्रवेश करने को कहेंगे, तो मैं बिना विचार किये उनकी आज्ञा का पालन करुंगा। यदि वह मुझे हलाहल विष पीने को कहें तो उसे भी मैं पी लूंगा।

Financial stability is a state of mind. Deprivation can have severe fallouts

Most people experience relative deprivation at some point in their lives. It can have two type of effects. One, you start feeling unhappy with your lot which can trigger negative emotions like anger and resentment. A few capitalize it as was done by Dr Ambedkar and work for a change in the society.

There is a second class which instead of taking the resolve to fight against the deprivation , they take to drinking, drugs and criminal activities.

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 150 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. **आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–**
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFC Code - PSIB0000242**
3. **आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.**
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का चैक भेज दे।

या Google Pay No. 9217970381 या Paytm No. 9958884557

We are never alone

Neela Sood

A powerful way of realizing this truth is by having a communion with higher self whom we call by different names---God, Allah, Oem, Omkar. According to Vedas and Upanishads, when infinite consciousness manifests itself, it takes the form the cosmic Self—it has been named *upasana*. Everything, including our universe, emerges in Him and disappears in Him. He is without beginning, or end, and within Him happens all creation, preservation and destruction. Only He exists from time immemorial and will continue till eternity i.e *anant and anadi.*

This awareness of the Cosmic Self gives us the strength to overcome feelings of loss and grief by developing attachment to what is real and having detachment to what is ephemeral. While He is real and attachment with Him gives eternal bliss, whereas attachment with physical things that are temporary, ends in unhappiness.

Therefore, we are never alone and at any turn of life; he is always with us. Let us keep our faith in Him intact and even when we suffer loss, respond by having an unwavering surrender to Higher self---believing whatever He does is for our good. Consequently, all the shadows of gloom that have been tormenting us will dissolve quickly, and we will bask in the luminous, celestial light. Feel Him nearest of the near and dearest of dear. Take every problem to Him, open your heart to Him. Soon you will start feeling stronger enough to take on the problem.

I was watching an old Bollywood movie of late 1950's. Its hero was a famed thief who when came to know that a group of persons, going on pilgrimage by ship, included one very wealthy businessman who was carrying with him a rare diamond to offer to his deity, joined that group with a sole motive to steal that diamond. The group included a dancing girl too, whom her foster mother was taking before the deity for the performance of her inaugural dance. During the journey, the thief and the dancing girl fell in love with each other. But, when the girl came to know that the thief was an atheist she refused to continue with the relationship as for her to be a non-believer in God was the greatest sin. During the travel, it started raining heavily and the dancing girl who was watching the sea waves standing in the balcony, suddenly got swept away by the strong tides. The thief immediately jumped without caring for his own life, to locate & save her but soon a situation developed when he helplessly found the water current carrying him even. Lo, suddenly things changed for better , the water currents threw him near to the girl and he was able to take hold of her.

After the medical aid when they both met. The thief said to the girl, " I am no more an atheist or a sinner in your languages. When I was lost in the water waves, I murmured, Oh God , if you really exist, as the people say, then nothing should happen to you. And in the matter of seconds, the water currents put me close to you. "

After their marriage, they went to thank the deity . With closed eyes, the thief was in deep communion

with the deity. When the prayer ended, the woman asked what did you ask for? " I did not ask for anything . I simply felt sorry for Him for not having known that He is the creator and very cause of our existence and our every act was predestined ." It was followed by another question from the girl, 'What did deity say', " He said that though you had abandoned me but I was always with you. My children can forget me but I can never."

This story reveals that we are neither helpless creatures made by chance, nor destined to suffer from vagaries and wrath of a vicious fate. We are a part of the cosmic Self and come into existence to fulfill the Divine agenda — that of the revelation and manifestation of Supreme Consciousness on earth.

✪☆✪

गायत्री मन्त्र के जाप का फायदा कब है

ओइम भू: भुव: स्व: तत्सवितुर्वरंण्यम भर्गो देवस्य धीमही धियो यो न: प्रचोदयात

हे ईश्वर हम आपने उस पापनाशक तेज स्वरूप का धयान करते हैं जो हमारी बु)यों को प्रकाशित करता है। कृप्या हमारी बूद्धियों में विराजमान रहें और अच्छे मार्ग की और प्रेरित करें ।

मेरा अपना अनुभव है कि मां गायत्री का जाप करने से आप जीवन में हर खुशी व सफलता को प्राप्त कर सकते है। परन्तु जाप में सफलता तभी मिलेगी जब आप ईश्वर के जिन गुणों को याद करते हो उन्हें स्वयं में अपनाने का यत्न करें।

यदि उसे ओइम कहते हो, रक्षक मानते हो तो स्वयं भी किसी की रक्षा करो। तुम उसे भू: कहते हो, अर्थात प्राणाधार मानते हो , तो सवयं भी किसी का प्राणाधार बनने का यत्न करो। तुम यदि उसे भुव: कहते हो अर्थात दुंखों का विनाशक समझते हा तो यत्न करो कि तुम व्यथ। में अपने लिये दुख की उत्तपि न करते जाओ। यत्न करो कि आप भी किसी के दुख दूर कर सकों यदि तुम उसे स्व: कहते हो अर्थात सुखों के दाता मानते हो तो यत्न करे कि आप भी दूसरों के लिये सुखकारी बनें। यह है वास्तविक विधी गायत्री उपासना की। **मीरासी और भाट की तरह बार बार दोहराने से तब तक कोई फायदा नहीं जब तक इन सभी गुणों को धाारण कर जो आप ईश्वर से मांग रहे है वही आप दूसरों को भी देने की कोशिश न करें**

हे प्रभु हम पर दया करो।

अक्सर हम ईश्वर से प्रार्थ ना करते हैं ———————————हेप्रभु हम पर दया करो। पर यह प्रार्थना कहने का हमें अधिकार तभी है जब हम भी ईश्वर के बनाये प्राणियों पर दया करें। पर ऐसा होता नहीं हैं। हम ईश्वर से तो अपने लिये दया की भीख मांगते रहते हैं पर उसी ईश्वर के दूसरे प्राणियों पर बिल्कुल दया नहीं करते और बड़ी क्रूरता से मार कर अपना भोजन बनाते रहते हैं। ऐसे में ईश्वर हम पर दया न करे तो हमें ईश्वर से कोई शिकायत नहीं होनी चाहिये।

हम तो इतने दयाहीन हैं कि जो प्राणी हमें नुकसान नहीं भी पहुंचाते उन पर भी दया नहीं करते। कानून का एक मौलिक सिद्धानत है "He who seeks equity must do equity." अर्थात जो पक्षपात रहित व्यवहार की अपेक्षा करता है उसे खुद भी पक्षपात रहित व्यवहार करना आवश्यक है। यही नहीं आगे कहा है——— "He who comes into equity must come with clean hands. हम संसारिक व्यवहार में तो इन नियमों की बात करते हैं। संसारिक न्यायालयों में तो न्यायधीशों के सामने तो इन नियमों का हवाला देते हुये न्याय मांगते हैं पर ईश्वर के साथ में यह व्यवहार के लियम पालन करना नहीं चाहते। यानी कि जिस को सब कुछ मान लिया जो कि सारे संसार का न्यायधीश है, उस के साथ हमारा व्यवहार साफ सुथरा नही।

इस लिये अगर हम चाहते हैं कि दयालु ईश्वर हम पर दया करे तो हमें भी अपने से कमजोर प्राणियों के प्रति वैसा ही व्यवहार करना होगा। बहुत से हिन्दु लोग गउ हत्या रोकने के अभियान में लगे हुये है। अच्छी बात है पर जब हम कहते हैं कि गउ को न मारो तो दूसरा व्यक्ति यह अर्थ भी निकाल सकता है कि बाकी पशुओं को मारने की छूट है। मुझे इतना पता है कि हम पंजाब , हरियाणा और हिमाचल में भैंस का ही दूध पीते है। जो भैंस इतना उपकार कर रही है उस को क्यों मारा जाये। अच्छा न हांगा हम यह कहें कि किसी भी प्राणी को न मारो। अगर आप मुसलमानों से यह अपेक्षा करते हैं कि वे हमारी भावनाओं की कदर करते हुये गाय को न मारे या खाये ंतो हम भी अपने पर यह अंकुश लगाये कि हम किसी भी प्राणी को न मारेंगे न खायेंगे। ऐसे में गाय की रक्षा अपने आप हो जायेगी और इम ईश्वर से यह मांगने योग्य हो जायेंगे ———हे प्रभु हम पर दया करों

Thinking of development--- don't shun China

Bhartendu Sood

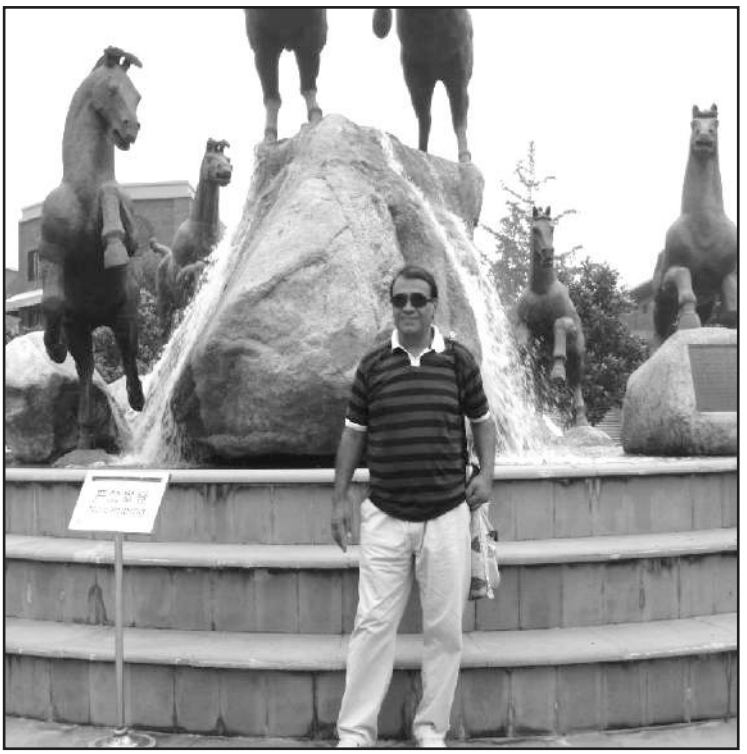

China and India are the two most populous countries in the world with their combined population almost 40% of the World population.. Not only this, both happen to be neighbors also. But, I had never thought that these two countries could be as vastly different from each other in all respects as my unbiased assessment unfolds. After entering Beijing, the first thing that baffled me to no end was the absence of thronging crowds. No usual deluge of humanity as one would expect after staying in India , an equally populous country. Density of people on roads and markets was as low as one could see in a sleepy middle size Chandigarh , two decades back. A quiet contrast to our Lutyens Delhi which if viewed from any of the over-bridges in New Delhi station, gives the impression of its bursting at the seam, with people. This became the starting point of my comparative study of these two countries.. After a couple of days I was very clear that there is no meeting point when it comes to the attitude, habits, civility and manners of the people of the respective countries, no doubt it can be ascribed to the models of governance they adopted.

The difference starts with the expansion model pursued by the planners of cities in these countries. China opted for vertical expansion, mindful of their huge population; with the result, the covered ground space for residential buildings for a given population is much less in Chinese Cities than in cities like Delhi which was allowed to spread horizontally. In Beijing , twenty to forty storeys of residential buildings have been raised everywhere in the city. One doesn't find huge bungalows as one sees in Delhi and many other Indian cities. If Chinese planners had their way, they would have accommodated all our 800 odd MPs in the space which at present is occupied by our four Ministers by raising 80 storey buildings of course with much better amenities.

The space so saved has been used to make the roads much wider than what we have in India . Average road in Beijing is 8-10 lanes, easily three times our outer ring road in Delhi . In nut shell, while our priority is big houses their priority is big roads. One can't see unplanned construction of buildings on both sides of the road as one drives away from the city limits, a common scene in India and a big source of obstruction in road traffic and a big obstacle in future widening of roads, at any point of time. We do the things in bits and pieces like from two lanes to four lane, they do in one go. We take years, they take months. Entire city is well connected by bus service and metro trains called sub ways. One has not to wait for more than 3 minutes for a bus or Metro train. I had not seen traffic of this scale, so disciplined, anywhere in the world

with no traffic jams, no change of lanes, no overtaking and no over speeding. All vehicles move at moderate speed. No noise of honking or red beacon VIP vehicles. Infect, I did not come across any VIP vehicle though I always moved in buses and subway trains. In a nutshell, the world around you doesn't stop when Neta travels, as one sees in India. No temples or dargahas so no obstruction or diversion of traffic, a common occurrence here. In order to see that people use public transport, the number of buses far exceeds the cars and in cars, taxis are more than the personal vehicles- as one would see in Bombay of the seventies. Buses were without conductors. There is one standard bus fare of 1 Yuan irrespective of the length of travel. They believe their people so no Ticket checkers are there. At every bus stop, one guide is kept to help passengers. Taxi fares are very reasonable and availability is good so people either use Bus or metro or Taxi. The bullet trains with average speed about 250Km per hour link the city with suburbs and cities.

I found Chinese planners far more intelligent and farsighted than their counterparts in India . They don't copy anybody. They are futuristic planners who planned everything keeping in mind their own needs. The height of their train coaches is more than our coaches and it gives comfortable space to three persons in three tier coaches. They have very huge waiting rooms on stations and passengers are allowed entry on platforms thirty minutes before the departure of the train against confirmed tickets only.

One gets to see huge parks, playgrounds and community places where people gather in the evenings for aerobics and music concerts. Average Chinese is much more agile and fit than his Indian counterpart. Apart from better nutrition I found that people in China are much more health conscious and do a lot of physical exercise to remain fit. Children are very healthy with no sign of malnutrition. Affluence & prosperity are visible in everything. I didn't come across any beggar.

Even old Beijing city has been refurbished nicely with no narrow roads or lanes as one sees in old Delhi . With cleanliness of the highest order, foreign tourists like the ambience. It is a pleasure to meet the police personnel. They are fit, smart, well behaved with no extra weight or paunch. To me it looks as if a mould is made and every police cop is passed through it, till the time he can, he is retained in the Police force. Cops have no air of hubris about them, very polite to talk to and helping, a contrast to our police force.

All roads, parks and public places are spic and span with no litter anywhere. Sanitation workers rush to clean if they find anything amiss. Free toilets are provided everywhere which are clean. But apart from above factors what separates Beijing from Delhi is its people. While we are always in a hurry, people in China look quite patient and relaxed, cultured and civilized, well behaved and always very helping. It is not only Beijing. even little known city like Xian are developed on the same model.

To them work is worship. People love their jobs. You can't say this about our own people and this is the one factor which leaves us pygmy before China though fifty years back we were at the same level. We are boisterous and suffer from self aggrandizement and self-glorification and it starts from the top. We have become accustomed to looking to the West or USA , whereas the right thing would have been to see China considering that both countries are highly populous. What works in a five crores population country like Italy or two crores population country Australia cannot work here in India

I don't think by enhancing our military resources and power we can confront China. Rather, it is our ability to match them in technical innovation and advancement that will make them and the South east countries take us seriously. Bangladesh has overtaken us in respect of all factors that go to measure the country in human-development index not by military belligerence but by opening their arms to China and in process developed themselves to the extent that today its per capita GDP is higher than the country which created Bangladesh with its military assistance. Therefore, if you are thinking of development--follow China, welcome their products and technology.

अपने में सुधार लाना ही धार्मिक होना है

भारतेन्दु सूद

महात्मा हसराज

धार्मिक होने की अलग अलग परिभाषाणें हैं। हम में अधिक यही मानते हैं कि यदि कोई व्यक्ति सबह शाम पूजा पाठ, उपासना, हवन या फिर नमाज अदा करता है तो वह धार्मिक है। बहुत हद तक यह ठीक इस लिये है क्योंकि जो व्यक्ति दोनो समय ईश्वर का स्मरण करता है वह अवश्य ईश्वरिय गुणों का गान करता है और यह उमीद की जाती है कि कुछ न कुछ गुण अपने जीवन में भी धारण कर लेता है और वे गुण उसके व्यवहार में भी आ जाते हैं। कहते है कोयले की दलाली में मुंह काला, यह बात ईश्वर भक्ति में भी उतनी ही सत्य है। उदाहरण के लिये ईश्वर दयालु है। यह अपेक्षा की जाती है कि जो व्यक्ति ईश्वर की उपासना करता है वह स्वयं भी दयालु हो जायेगा और हम यह कह सकते हैं कि वह व्यक्ति धार्मिक है।

धर्म के आचरण का अर्थ है सब कार्य धर्माअनुसार करना । धर्मानुसार करने का अर्थ है वही करना जो धर्म के अनुकूल है और वह कार्य नहीं करना जो धर्म के विपरीत है। धर्मानुसार क्या है? जो नयाय संगत है, सत्य है, जिस के करने से हम किसी का हक नहीं छीन रहे, किसी से छल कपट नहीं कर रहे। जिसे करते हुये हमारा व्यवहार वैसा ही है जैसा की हम दूसरे का अपने प्रति अपेक्षा करते हैं। धर्म आप को अन्ध्कार से प्रकाश की और ले जाता है जब की अधर्म का पालन प्रकाश से अन्धकार की और ले जाता है। धर्म आपकी सोच को साकारात्मक बनाता है, जब की अधर्म नाकारात्मक सोच की और ले जाता है। यह आप तभी महसूस करते है जब कि आप किसी कारण से किसी के साथ अन्याय करते है, आपका सब सुख चैन खत्म हो जाता है। सत्ययुक्त व न्यायपूर्ण व्यवहार धर्म का बहुत बड़ा हिस्सा है। परन्तु यह तभी सम्भव है यदि हमने अच्छे संस्कार या फिर किसी अच्छे गुरू के सम्र्पक में आने से धर्म के ठीक अर्थ को समझा हो । इस के विपरीत यदि हमने गुरू के नाम का जाप करना या दो समय किसी गुरू प्रतिमा के आगे उसके नाम लेना ही धर्म समझा हो तब अवश्य नहीं कि हमारा आचरण धर्माअनुसार हो। गुरू ने हम को चेला बना कर अपना मतलव पूरा किया और हमने आगे अपने चेले बना कर किसी मत को चलाना धर्म नहीं है और एसे में हमारा आचरण धर्माअनुसार नहीं हो सकता क्योंकि हमारा मकसद हर समय दुनिया को बेवकूफ बनाकर अपना मतलव सीधा करना है।

हम में सभी जब इस धरती पर पैदा होते हैं तो हम धार्मिक नहीं होते। हमें अच्छे बुरे या फिर धर्म अधर्म का ज्ञान नहीं होता। जैसे जैसे हम बड़े होते हैं हम जिस वातावरण में रहते हैं उसके अनुसार हमारे में गुण अवगुण आने लगते हैं। यह वातावरण क्या है–––माता पिता, हमारे भाई बहन व मित्र, विघालय, मन्दिर या समाज जहां परिवार जाता है और आज के समय में सब से महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है इलैक्टोनिक मिडिया जिस में टैलिविजन, फोन व ईन्टरनैट सभी आ जाते है। जब हम युवा होते हैं तो जिस वातावरण से हम गुजरे होते हैं, उसी के अनुसार हमारा व्यक्तित्व बन गया होता है। यहां व्यक्तित्व का अर्थ है हमारे अन्दर के गुण व अवगुण। उदाहरण के लिये कोई यदि मैं अहंकारी हूं तो यह अहंकार मैं जन्म से लेकर नहीं आया था परन्तु उसका स्त्रोत है यह वातावरण जिस में मैं बड़ा हुआ।

मान लो मैं ं पढा लिख व्यक्ति हूं परन्तु मुझ में अंहकार व क्रोद्ध कूट कूट कर भरा है। यह मेरा अंहकार व क्रोद्ध मेरे व्यवहार में प्रकट होता रहता है और दूसरों खास कर बड़ों को भी ठेस का कारण बनता है। हां मैं हवन, पूजा व पाठ सुवह शाम करता हूं । इस पूजा पाठ की वजह से ही मैं स्वयं को धार्मिक मानता हूं। और यही राय बहुत से दूसरे व्यक्तियों की भी है। इसका सब से बड़ा उदाहरण हमारे आर्य समाज है, क्योंकि प्रबन्धन से जुड़े व्यक्ति इसका शिकार है।ऐसे में मेरा मानना है कि ऐसे में मैं यदि अपने आप को धार्मिक समझता हूं या फिर दूसरे समझते हैं तो यह मेरी और दूसरे लोगों की गलत फहमी है। चाहे यज्ञ है या पूजा पाठ सभी यही सदेंश देते हैं कि अंहकार और क्रोद्ध व्यक्ति के शत्रु है और उनको दूर करने में ही भला है। यदि रोज के पूजा पठ ने भी मुझ में यह सोच नहीं लाई कि मैं बुराईयों से ग्रस्त हूं तो इसका कोई लाभ नहीं। इनका लाभ तभी है यदि मुझ में आहिन्ता यह समझ आने लगे कि मैं तो बहुत भयंकर बुराईयों से ग्रस्त हूं और मेंरा कल्याण इसी में है कि मैं इन को दूर करूं।

यह जीवन बहुत छोटा है चाहे शुरू में 80–100 साल बहुत अधिक लगते हैं। देखते ही देखते हम बचपन से जवानी व फिर बुढ़ापे में पहुंच जाते है। देखने की बात यह है कि जिन अवगुणों से हम जवानी में ग्रस्त थे वे बुढ़ापे में पहुंचने पर भी वैसे ही विराजमान हैं या हम उन अवगुणों से छूट गये हैं। यदि तो हम छूट गये हैं तब तो हमारे धार्मिक हाने का फायदा हो गया है और अगर वैसे के वेसे ही हैं तो यह पूजा,पाठ,हवन सब व्यर्थ था। आईये एक कदम और आगे चले ––– हम यह देखें कि हम ने न केवल अपने आप को अवगुणों से स्वतन्त्र कर लिया है परन्तु यज्ञ के अथ्रत कलयाणकारी मार्ग पर चल पडे है तब हम असली रूप में धार्मिक हो गये है। ऐसे उदाहरण एक नहीं बहुत से हैं जिन्होने अपना जीवन, धन दौलत दूसरों के लिये अर्पित कर दिया। यह इसलिये हुआ क्योंकि उन्होनें धर्म व धार्मिक होने के ठीक अर्थ को समझाा

Quest for truth leads to spirituality

Bhartendu Sood

There are different answers to the question as to how a man becomes spiritual. Many attribute it to the renunciation of world or worldly pleasures, called *veragya* then there are others who say that it is one's curiosity to know the creator of this world that makes him spiritual .

As I can see, whether Socrates, Plato , Aristotle, Marcus Aurelius , Tolstoy from the West or Budhha, Prophet Mohhamed, Nanak, Kabir, Dalai Lama, Dayanand or Vivekananda from the East , they had one thing in common. They defied the traditional / prevailing doctrines/systems and chose to undergo penance in their quest to know the truth. They looked inside rather than getting enamored to the outside world; their inquisitiveness made them to indulge scientific investigation and it lead to self relisation. They didn't blindly accept what was written in scriptures or was told by their Gurus. What they got to know after years of meditation, study and rigorous penance was not the same but it had in it the elements of truth. It goes to prove that to be spiritual in real sense one must strive to know the truth.

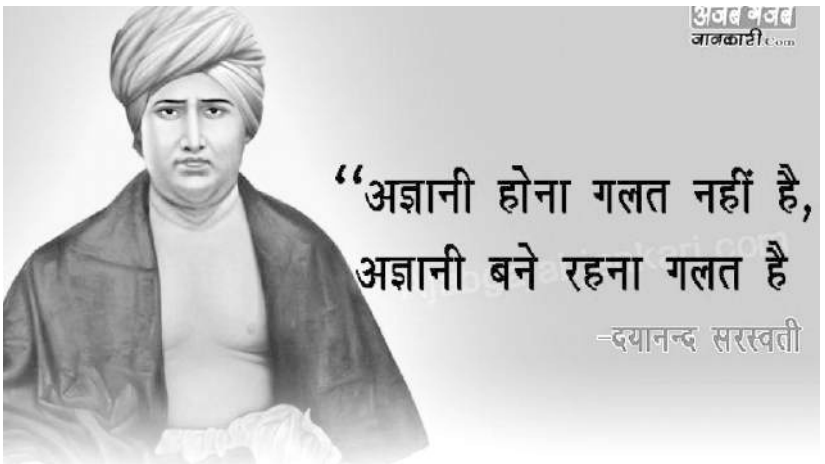

The Rishi's of yore who wrote Upanishads also tried to reach at the base of the truth. For example, in Ishopanishad these *lines Isha vasyanidam sarvam yatica jagatyam jagat tena tyaktena bhunjitha ma grdhah kasya vidhanam* 'God is present everywhere even in the minutest part of element, in animate and inanimate both. Everything made by God is for the enjoyment of human beings but without his getting attached and without having any greed' manifests the truth which seems to have been obtained after a lot of study and meditation.

In Vedas, while giving different names to God depending upon His qualities, one such name is Satya i.e. truth which implies that to know God is to know the truth and the spiritual person is one who gets to know the truth and uses that in his life to remove misconceptions which take birth due to the ignorance. But, that doesn't mean that his quest for truth ends once he has come to know a part of truth. The real spiritual person is the one whose quest for truth is unending. He is always trying to reach the roots. Another aspect of his quest for truth is that he does it not only for himself but for the benefit of the entire humanity. Most of the time these great souls had started their quest when they found

humanity suffering from ignorance. Best thing about the path to the truth is that when the seeker comes to know the truth or even part of that he is free of hatred and has love for entire humanity. For him there are no geographical boundaries and his message is for the entire universe. It is for this reason that Socrates, Plato , Aristotle are admired and respected not only in their country of origin Greece, but in the entire world.

Can everybody be a seeker of truth ? Answer is 'Yes' . it is a misconception that it takes you away from the practical life or workaday world. On the other hand it makes your life balanced and endows you of the qualities that turn you into a good human being in the spirit of Veda's sukti 'manur bhava' and keeps you away from *adharma*. Adharma is nothing but anything that arises from falsehood. In Vedas life has been divided into four ashrams *Brahamcharya, Grihasth, Sanyasa and Vanaprasth*. These are designed in the manner that keeps a man a seeker of truth and in the end he achieves moksha i.e eternal bliss.

These three simple practices can lead to your eternal bliss

1 Persistent practice of equanimity under all circumstances—called tap

2 To accept the things after investigation to see how close it is to the truth.
Offering life to Cosmic Will -called Ishwarpranidhan.

✪☆✪

पुस्तक

(English Book of short stories---Our Musings)

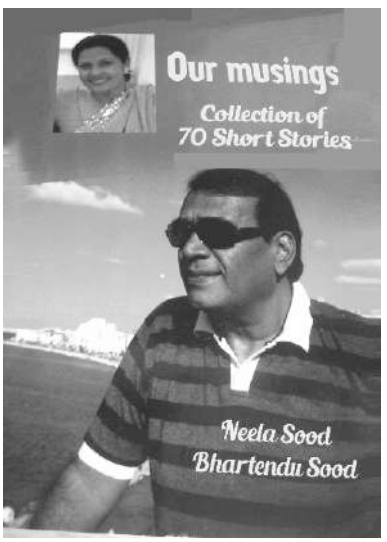

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी 70 छोटी कहानियों, जो कि अंग्रेजी समाचार पत्रों में समय समय पर प्रकाशित हुई हैं, का संग्रह एक पुस्तक में प्रकाशित किया है, जिसका नाम Our Musings है। इस पुस्तक की कीमत 150 रूपये है। जो भी इस पुस्तक को खरीदने का इच्छुक हो वह 100 रू भेजकर या हमारे बैंक ऐकाउंट में जमा करवा कर मंगवा सकता है। बैंक ऐकाउंट वही हैं जो कि वैदिक थोटस पत्रिका में दिये है। भेजने का खर्चा हमारा होगा।

कृपया निम्न बातों का ख्याल रखें,

पुस्तक ईगलिश भाषा में है।

पुस्तक केवल धार्मिक न हो कर जीवन के विभिन्न पहलुओं को छूती है

नीला सूद, भारतेन्दु सूद 9217970381

पत्रिका में दिये गये विचारो के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।

दिन सिर्फ दौड़-भाग के लिए नहीं है!

लवी मिश्रा

शायद किसी बाइक के विज्ञापन पोस्टर पर लिखा था– शे मअमतल कंल ंत्बम क्लश. एक बाइक कंपनी के लिए भले ही ये पंक्तियां बाइक की खूबियों को दिखाने वाली हों, पर अगर आज की जिंदगी के संदर्भ में इस पर विचार किया जाये तो लगता है कि जैसे ये आज के इंसानी जीवन को विश्लेषित करना चाहती हों। हम हर पल रेस ही तो लगाते हैं, कभी अपनी इच्छाओं से, कभी

अपनी महत्वाकांक्षाओं से तो कभी आस–पास के लोगों से। हर नया दिन हमारे मन में यही विचार लेकर आता है कि आज हम अपनी अमुक इच्छा पूरी करेंगे। पर जैसे ही हम अपनी एक इच्छा पूरी करते हैं कि दूसरी इच्छा उत्पन्न होकर हमें अपने पीछे भगाने लगती है। और हम इस रेस में इस प्रकार शामिल हो जाते हैं कि रास्ते में आने वाले खूबसूरत नजारों की ओर नजर तक नहीं उठा पाते।

ऐसी ही एक कहानी सुनाना चाहती हूँ। एक लड़का था, वह बहुत अमीर व्यक्ति बनना चाहता था। उसने पहले छोटा व्यवसाय शुरू किया, उसकी मेहनत और लग्न से उसका व्यवसाय बहुत तेजी से बढ़ने लगा। उसकी शादी हुई, बच्चे हुए लेकिन उसका पूरा ध्यान अपने व्यवसाय पर ही रहता। वह न तो कभी अपनी पत्नी और न ही बच्चों को समय देता। बच्चों की देख रेख का पूरी जिम्मेवारी पत्नी को ही निभानी पड़ती । अगर कभी उसकी पत्नि इस बारे में शिकायत करती तो

तो उसका जवाब होता कि परिवार की सबसे बड़ी जिम्मेदारी उसके सदस्यों की जरूरतें पूरी करना है और वे केवल पैसे से ही पूरी होती हैं। वह कहता, 'मैं जितना ज्यादा पैसा कमाऊंगा उतना ही अच्छे से परिवार का ध्यान रख पाऊँगा।'

उसकी पत्नी बहुत अकेली महसूस करती, बच्चे भी धीरे–धीरे बड़े हो गए थे और अपनी दुनिया में रमने लगे थे। चूँकि बच्चों को पिता से कभी भावनात्मक लगाव नहीं मिला था इसलिये वो अपनी मां तक सीमित थे। पत्नी को अचानक कैंसर हो गया, उसने बहुत पैसा खर्च किया इलाज में, पर कभी भी पत्नी के पास बैठ उसे दिलासा नहीं दिया, क्योंकि ऐसा करना वह जरूरी नहीं समझता था। तभी उसकी पत्नी चल बसी,

अब वह भी बूढ़ा हो रहा था और पत्नी के जाने के बाद था भी एक दम अकेला। शारीरिक और मानसिक शक्ति के क्षीण होने के साथ ही वह बिस्तर से लग गया। उसका व्यवसाय उसके बेटों ने संभाल लिया था। बीमारी और अकेलेपन में उसे भावनात्मक संबल की जरूरत महसूस होने लगी थी। एक दिन उसने अपने बेटों से कहा कि कभी–कभी दो पल मेरे पास बैठ जाया करो, तो उन्होंने जो जवाब दिया, पापा आप ने ही तो सीखाया है ––––, 'आपको जिन्दा रहने के लिए क्या चाहिए? अच्छा खाना और अच्छी दवाइयाँ, हमें नहीं लगता कि इसमें कोई कमी है। अगर किसी भी प्रकार से धन की कमी हैं तो बतायें हम और दे देंगे। ' यह सुनकर उसे पता चला कि उसने अपनी जिंदगी के कितने अनमोल पलों को अपनी महत्वाकांक्षा के बोझ तले कुचल दिया।

इसलिए एक बाइक या कार के लिए हर दिन रेस डे हो सकता है, पर हम इंसानों के लिए नहीं। यह खूबसूरत दुनिया हम अपनी सुन्दर इंसानी आँखों से शायद एक बार ही देख पाते हैं! इसे समझ लिया तो जीने का ढंग स्वयं आ जायेगा।

अपने जीते जी अपनी संपत्ति बच्चों के नाम न करवाना दूरदर्शिता ही होगी

सीताराम गुप्ता

प्रेमचंद की कहानियाँ आज भी कम प्रासंगिक नहीं। पूर्ण रूप से न सही आशिंक रूप से अवश्य हैं। कहानी पंच परमेश्वर को ही लीजिए। बेशक अलगू चौधरी और जुम्मन षेख़ जैसे पंच आज दुर्लभ हो गए हैं लेकिन जुम्मन षेख़ की बूढ़ी ख़ाला जैसी बूढ़ी औरतें और मर्द आज भी मौजूद हैं जो अपना सब कुछ किसी के नाम करवा देने के बाद अपमान, उपेक्षा और देखभाल में लापरवाही का शिकार हैं। प्रेमचंद की कहानी बूढ़ी काकी की काकी जैसे न जाने कितने किरदार आज भी देखे जा सकते हैं जो अपनी समस्त जायदाद अपने निकट संबंधियों के नाम करवाने के बाद दो वक़्त की रोटी तक के लिए मुहताज हैं। जब व्यक्ति अशक्त हो जाता है तो उसे अपने नज़दीकी रिश्तेदार ही सबसे बड़े मददगार नज़र आते हैं और ऐसे अधिकांश नज़दीकी रिश्तेदार जमीन–जायदाद अपने नाम करवा लेने के बाद धोखा देने में कोई कसर नहीं रख छोड़ते। रिश्तेदार छोड़िए अपने सगे बेटे–बेटियाँ भी कई बार कम निकम्मे और धोखेबाज़ नहीं निकलते इसलिए अपनी संपत्ति दूसरों के नाम करवाने से पहले अच्छी तरह से सोच–विचार कर लेने में कोई बुराई नहीं।

अधिकांश व्यक्ति जब सेवानिवृत्त हो जाते हैं अथवा अपना कारोबार आदि करना बंद कर देते हैं तो प्रायः अपना व्यवसाय आदि बच्चों के हवाले कर देते हैं। कुछ लोग अपनी जीवन भर की बचत अथवा कुल जमा पूँजी भी बच्चों को दे देते हैं व अपनी समस्त चल–अचल संपत्ति भी उनके नाम करवा देते हैं। इसमें कोई बुराई नहीं क्योंकि बाद में ये सब उन्हीं को तो मिलना होता है। लेकिन इसके बावजूद सेवानिवृत्त अथवा वृद्ध व्यक्तियों द्वारा अपने जीते जी सारी संपत्ति बच्चों के नाम करवा देना उचित प्रतीत नहीं होता क्योंकि हर काम उचित समय पर किया जाना ही लाभप्रद होता है। किसी भी कार्य में जल्दबाज़ी ख़तरनाक हो सकती है। विशेश रूप से संपत्ति के हस्तांतरण के मामलों में। संपत्ति एक तरह से सुरक्षा की गारंटी है। किसी दबाव में आकर संपत्ति का हस्तांतरण करना तो बिल्कुल भी उचित नहीं। जब मरने के बाद सारी संपत्ति बच्चों अथवा वैधानिक उत्तराधिकारियों को ही मिलनी है तो फिर जीते जी सारी संपत्ति उनके नाम करवाने का क्या औचित्य हो सकता है?

यदि कोई व्यक्ति अपने जीते जी अपनी सारी संपत्ति बच्चों के नाम करवा देता है तो इससे भविश्य में उसके लिए कई समस्याएँ खड़ी हो सकती हैं। आपके नाम की संपत्ति एक ऐसी चीज़ है जो आपको अनेक समस्याओं से बचा सकती है। इससे आपके नज़दीकी रिश्तेदार न केवल आपसे जुड़े रहते हैं अपितु संपत्ति के लोभवश आपकी देखभाल करने को भी तत्पर रहते हैं। सबसे मुख्य बात तो ये है कि जब व्यक्ति के पास कुछ भी नहीं होगा तो उसे स्वयं कमतरी का अहसास होने लगेगा। उसे हर बात के लिए दूसरों का मुँह तकना पड़ेगा। वो अपनी इच्छा से कुछ नहीं

कर पाएगा। ऐसे में उसका आत्मविश्वास समाप्त हो जाएगा और व्यक्तित्व भी धूमिल पड़ने लगेगा। कुछ लोगों को जैसे ही माता–पिता अथवा नज़दीकी रिश्तेदारों की संपत्ति मिलती है उनका व्यवहार बदल जाता है। संपत्ति हस्तांतरण के बाद अथवा नकद पैसा मिल जाने के बाद उनकी प्राथमिकताएँ बदल जाती हैं। जल्दी ही वे माता–पिता अथवा रिश्तेदारों में कमियाँ निकालना षुरू कर देते हैं। कुछ लोग न केवल उपेक्षा से पेश आने लगते हैं अपितु माता–पिता अथवा नवाश्रितों का अपमान तक करने लग जाते हैं।

कई निकम्मे बेटे–बेटियाँ तो माता–पिता की संपत्ति मिलते ही उन्हें घर से बाहर कर देते हैं। सुविधाओं की बात छोड़िए वे दाने–दाने को मुहताज हो जाते हैं। बुढ़ापे और बीमारियों के कारण कइयों की दशा और भी षोचनीय हो जाती है। कई लोग माता–पिता के अशक्त होते ही उन्हें किसी वृद्धाश्रम में छोड़ आते हैं या बूढ़े माता–पिता बच्चों के दुर्व्यवहार से परेषान होकर स्वयं ही किसी वृद्धाश्रम में चले जाते हैं। वृद्धाश्रमों की बढ़ती संख्या इस बात का प्रमाण है कि इस प्रकार के बच्चों की संख्या बढ़ती जा रही है जो वृद्धावस्था में अपने माता–पिता की ठीक से देखभाल नहीं करते व उनकी संपत्ति लेने के बाद भी उन्हें दर–दर की ठोकरें खाने के लिए विवश कर देते हैं। जब हम अपने चारों ओर इस प्रकार की घटनाएँ घटित होते हुए देखते हैं तो हम सचेत क्यों नहीं रहते? हम क्यों अपनी संपत्ति बच्चों के हवाले करके ख़ुद अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारते हैं?

वास्तव में माता–पिता अपने बच्चों से बहुत प्यार करते हैं और उन पर पूरा विष्वास भी करते हैं। वे सपने में भी नहीं सोच सकते कि उनके बच्चे उनके साथ ग़लत व्यवहार कर सकते हैं। प्रायः सभी का ये कहना होता है कि उनके बच्चे औरों के बच्चों जैसे नहीं हैं। वास्तविकता तो ये है कि हमारे बच्चे कितने भी अच्छे क्यों न हों औरों की तरह ही उनके बदलने में भी देर नहीं लगती। जब तक हाथ में सब कुछ है तब तक तो सब भले ही बने रहते हैं। वास्तविकता का पता तो खाली हाथ होने पर लगता है। कुछ लोग तो माता–पिता का पैसा व संपत्ति पाने के लिए ही बहुत अच्छे बन जाते हैं। ऐसे कलाकारों से बचना भी असंभव होता है अतः व्यावहारिकता का पालन करना अनिवार्य है।

यदि अपना बुढ़ापा ख़राब नहीं करना है तो ज़्यादा भावुक होने की बजाय विवेक से काम लेना अनिवार्य है। किसी भी सूरत में बच्चों की चिकनी–चुपड़ी बातों में न आएँ। याद रखिए अपने जीते जी अपनी संपत्ति बच्चों को न देना न तो अनैतिक है और न अव्यावहारिक ही है। आपके जीते जी संपत्ति के बँटवारे के लिए न तो कोई नैतिक रूप से और न ही कानूनी रूप से आपको विवश कर सकता है। यदि आपने अपनी संपत्ति का बँटवारा कर दिया है और इसके बाद बच्चे आपकी ठीक से देखभाल नहीं करते अथवा दुर्व्यवहार करते हैं तो आप अपनी संपत्ति वापस ले सकते हैं लेकिन इसके लिए न्यायालय की मदद लेनी पड़ेगी। क्योंकि ये उम्र न्यायालयों में धक्के खाने की नहीं होती अतः अपनी संपत्ति का बँटवारा करने से पहले भली–भाँति विचार कर लेना अनिवार्य है।

- भविश्य में किसी भी प्रकार की परेशानी से बचने के लिए कुछ चीजें ज़रूरी हैं। अपने जीते जी अपनी संपत्ति बच्चों के नाम न करवाएँ और न ही अपनी बचत अथवा जमा पूँजी ही उनके हवाले करें। जब तक आप संपत्ति के स्वामी हैं तब तक घर में आपकी अपेक्षाकृत अच्छी स्थिति बनी रहेगी इसमें संदेह नहीं।
- लेकिन इसका अर्थ ये नहीं है कि यदि कोई बच्चा सकट में है तो आप उसकी मदद न करें। यदि आपके पास पर्याप्त संपत्ति अथवा पैसे हैं और आपके बच्चों की स्थिति ठीक नहीं है तो ऐसे में उनकी मदद न करना बहुत बुरी बात होगी। यदि बच्चे किसी भी प्रकार के संकट में हैं तो उनकी हर संभव मदद करें लेकिन अपनी स्थिति किसी भी स्थिति में दयनीय न होने दें।

- घर में अपने रहने के लिए उचित स्थान का चयन करें व अपने लिए पर्याप्त स्थान जैसे कमरा व षौचालय आदि सुनिश्चित करें। अपने रहने के स्थान को स्टोर या कूड़ाघर न बनने दें। कभी भी घर के बेकार स्थान अथवा उपेक्षित कोने में अपना ठिकाना न बनाएँ। हमेशा अधिकारपूर्ण रवैया बनाए रखें।

- दूसरों पर अत्यधिक निर्भर रहने की बजाय आत्मनिर्भर रहने का प्रयास करें। यथासंभव न केवल अपना काम स्वयं करने का प्रयास करें अपितु घर के दूसरे सदस्यों के लिए भी जो संभव हो अवष्य करें। परिवार के लिए अपनी उपयोगिता कभी कम न होने दें। ये तभी संभव है जब आप रोगमुक्त व स्वस्थ रहें। इसके लिए अपने स्वास्थ्य की अच्छे से देखभाल करें।

- बच्चे यदि आपकी संपत्ति बेचकर बड़ी संपत्ति लेना चाहते हैं तो वो उनके नाम से नहीं अपितु अपने नाम से लें। यदि ये संभव न हो तो संयुक्त नाम से लें और उसमें भी अपने लिए पर्याप्त व सुविधाजनक स्थान सुनिश्चित कर लें। यदि ऐसा भी संभव न हो तो कोई अन्य संपत्ति अपने नाम करवा लें।

- चालाक बेटे व बहुएँ प्रायः बड़ी संपत्ति अथवा मकान या दुकान खरीदने के नाम पर पुरानी संपत्ति बिकवा देते हैं और नई संपत्ति अपने नाम से ख़रीद लेते हैं। ऐसी स्थिति में सब तो नहीं लेकिन बहुत सारे लोग बाद में अपने बूढ़े माता–पिता की उपेक्षा करना व उनसे दुर्व्यवहार करना षुरू कर देते हैं।

- अपनी पूरी बचत अथवा जमा पूँजी बच्चों के हवाले न करें। जब तक आपकी स्वयं की आर्थिक स्थिति अच्छी है आप बहुत अच्छे हैं। बिल्कुल पैसा पास न होने पर भी व्यक्ति अपने आपको असहाय महसूस करने लगता है। ऐसी स्थिति न आने दें। यदि आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी है तो आप मनचाही सुविधाएँ पा सकते हैं।

- ये भी असंभव नहीं कि आपके बच्चों के पास सचमुच समय की कमी हो और वे आपकी देखभाल के लिए पर्याप्त समय न निकाल सकें। ऐसे में आप अपनी सुविधा व सहायता के लिए किसी सहायक को रख सकते हैं। यदि आपके पास न पैसा होगा और न संपत्ति ही तो ऐसे में आपकी समस्याएँ बढ़ सकती हैं।

- कई माता–पिता स्वयं अपने लिए कई प्रकार की समस्याएँ निर्मित कर लेते हैं। वे जीते जी अपनी संपत्ति का बँटवारा तो कर देते हैं लेकिन वो बँटवारा पूरी तरह से पक्षपातपूर्ण होता है। कुछ माता–पिता कुल संपत्ति में से अपना हिस्सा भी ले लेते हैं और वो अपने चहेते पुत्र अथवा पुत्री को दे देते हैं। ये सरासर ग़लत बात है। आज के समय में बेटी को उसका हिस्सा अवश्य दें। अगर आप नहीं देते हैं तो आप अपने साथ बेटी का हक न देने का पाप ले कर जायेंगे।

- जो भाई अथवा बहन गलत तरीके से दूसरे भाई–बहनों की संपत्ति स्वीकार कर लेते हैं उनसे क्या उम्मीद रखी जा सकती है? पहले तो वे माता–पिता के हिस्से के लालच में मीठी–मीठी बातें करते हैं लेकिन जल्दी ही उनका असली रूप सामने आ जाता है। पक्षपात करने वाले माता–पिता सबसे अधिक दुर्गति झेलते हैं।

- आप अपनी संपत्ति किसी के नाम न करवाएँ लेकिन पक्षपात बिल्कुल न करें। बेहतर तो ये होगा कि आप पक्षपातरहित होकर अपनी विल लिखकर रख लें और उसमें स्पश्ट कर दें कि हमारे या मेरे बाद ही संपत्ति का बँटवारा किया जाए। यदि इस प्रकार की कुछ सावधानियाँ रखी जाएँ तो बढ़ती उम्र में बिना वजह परेशानियाँ नहीं खड़ी होंगी और घर में मान–सम्मान भी बना रहेगा।

Epicurus held man responsible for his happiness or distress

Epicurus of Samos was a major philosopher during the Hellenistic period, who impacted many later thinkers like Karl Marx, Kant and Nietzsche. He founded The Garden, a place where his teachings were put into practice. Contrary to the then prevailing Greek culture, his radical equality enabled women and slaves to join his school.

The misunderstanding of his philosophy which persists till today is that it is rampantly hedonistic and self-indulgently pleasure-seeking. In reality, his philosophy uses pleasure as the highest good, that which is valued for its own sake and not for the sake of anything else. He pointed out that one's actions need to be directed towards attaining that pleasure, ataraxia, that is, deep calm and tranquility. Ataraxia implies abstaining from unnecessary desires and remaining content with simple things and pursuing virtuous habits.

Epicurus advocates reducing desires to the minimum, to just the basic and unavoidable, which can be easily satisfied, as against wealth or power that seems to have no limit and gives a false promise of security. All pleasures are good but the consequences are to be borne in mind.

So if you thought carefully, the initial pleasure you were after might not be worth it.

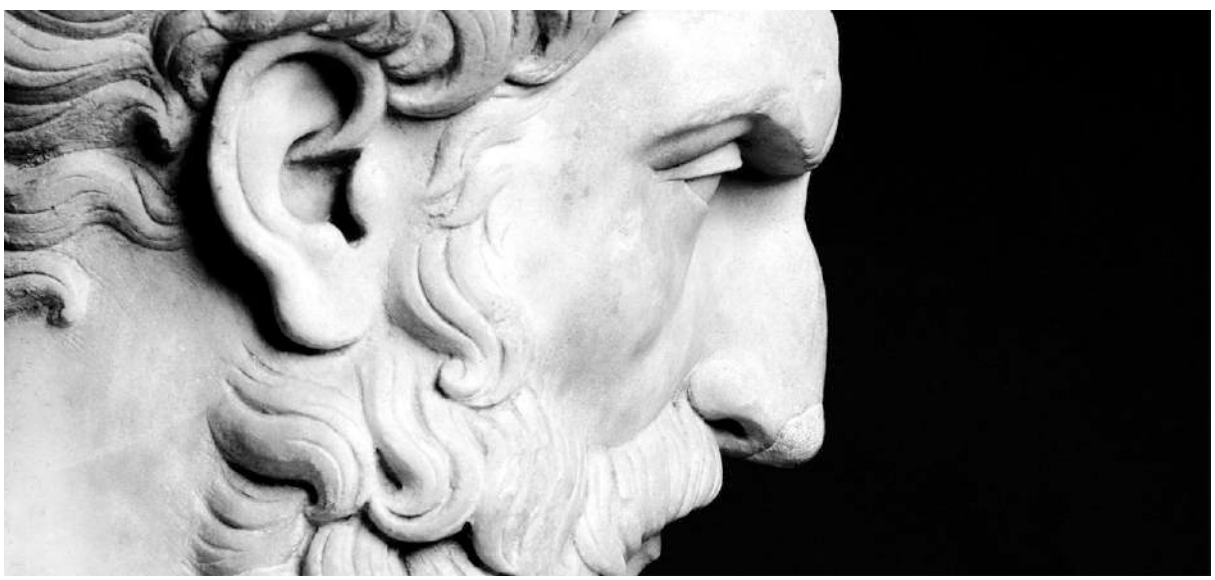

According to him all of the virtues are ultimately forms of prudence, and seeing what is in one's best interest. The absence of prudence is when indulgence is equated with pleasure – such as overeating or consuming wrong foods; this will ultimately offset the initial pleasure and lead to pain. The key concern should be the weighing of plusses and minuses, of long and short-range satisfaction as in the shreyas and preyas of the Upanishads.

In Epicurus' view, although all pain is undesirable, at times it is necessary to bear pain for a greater gain. Unrestrained excess is sure to cause pain. The pain can be physical or mental, the latter is in the form of

anxiety about the future, and fear of death.

Only by reasoning, using caution, discretion, and avoiding reckless decisions and without fear can one ever achieve a sense of clarity. This may not be easily possible because both experience and discernment take time. Friends and companions with goodwill are required to keep one on the right track, because of the tendency we have to deceive ourselves. They provide a shield against the unknown and troublesome happenings.

The key aspects that mark Epicurus' teachings are – freedom from anxiety, spending time on reflection, freeing oneself from authorities, and above all, nurturing friendships. The more knowledge one gains about oneself the more one recognizes needs and the less one desires what is unnecessary.

Our abundance lies not in what we possess but in what we truly enjoy. And the caution is: Nothing is enough for the one who thinks enough is too little. Happiness is achieved through experience, maturity and discernment.

The responsibility in the Epicurean way of life is not relegated to the gods but is placed squarely upon human shoulders. Epicurus' focus is on building a workable human system that factors personal responsibility in decision making - and in that sense, humans are essentially alone.

All things considered, the correct viewing of Epicurus and his teachings leads us to recognise him more as a tranquilist than a hedonist.

✪☆✪

ईश्वर प्रेम स्वरूप है, उस ने मनुष्य को भी प्रेम स्वरूप बनाया है

जैसे ईश्वर प्रेम स्वरूप है वैसे ही ईश्वर ने मनुष्य को भी प्रेम स्वरूप बनाया है यह अलग बात है मनुष्य जब संसार के प्रलोभनो व मन की बृतियों में में बहकर स्वयं को ईश्वर से अलग कर लेता है तो उसमें कई बुराईयां घर करने लगती है जिस में घृणा भी एक है। अर्थात सूर्य रूपी प्रेम को बादल रूपी घृणा के बादल घेर लेते हैं। यह बादल छट भी जाते हैं जब मनुष्य फिर से ईश्वर के नजदीक आ जाता है। ईश्वर के नजदीक आते ही ईश्वरीय गुण––प्यार, करूणा फिर से लौट जाते हैं।

जिस प्रकार प्रकाश से अन्धेरा दूर होता है, उसी प्रकार प्यार से धृणा का खातमा होता है। जैसे अन्धकार अन्धकार द्वारा खत्म नहीं कर सकता उसी तरह धृणा घृणा को नष्ट नहीं कर सकती। प्यार प्रकाश की तरह है व घृणा अन्धेरे के सामान है। जिस के अन्दर घृणा है वह अन्धकार ही फैला सकता है व जिस के अन्दर दूसरों के लिये प्यार है वह सब को प्रदिप्त करता है, रोशनी प्रदान करता है।

एक दार्शनिक के अनुसार–––बजाये इसके कि हम यह कहें कि अपनी घृणा व क्रोध पर काबू पाओ उससे कहीं अच्छा है हम यह कहें कि सब से प्यार करों जब हम प्यार करेंगे तो घृणा व क्रोध वैसे ही खत्म हो जायेंगे जैसे दीपक के आते ही अन्धकार खत्म हो जाता है।

व्यक्ति प्यार तभी कर सकता है जब वह दूसरे व्यक्ति से कोई इच्छा या अपेक्षा न करता हो और उससे कुछ पाने के स्थान पर उसे कुछ देना ही चाहता हो। प्यार बिना कुछ इच्छा किये बांटने की चीज है। जो व्यकित प्यार पाने का इच्छुक रहता है वह दुखी रहता है और जो प्यार देना ही अपना जीवन का रास्ता बना लेता है वह सुखी रहता है।

निर्भय व स्पष्टवादी स्वामी श्रद्धानन्द की कुछ बातें

बहुत की कम व्यक्ति निर्भय व स्पष्टवादी होते हैं स्वामी श्रद्धानन्द उन इने.गिने व्यक्तियों में एक थे। न किसी ओहदे की इच्छा थी न धन संपति एकत्रित करने की और न ही प्रशंसा सुनने की। ऐसा व्यक्ति निर्भय व स्प्ष्टवादी स्वभाविक रूप से बन जाता है। उनकी कुछ बातें पढ़ी जो कि मैं पठको के साथ सांझा करना चाहुंगा

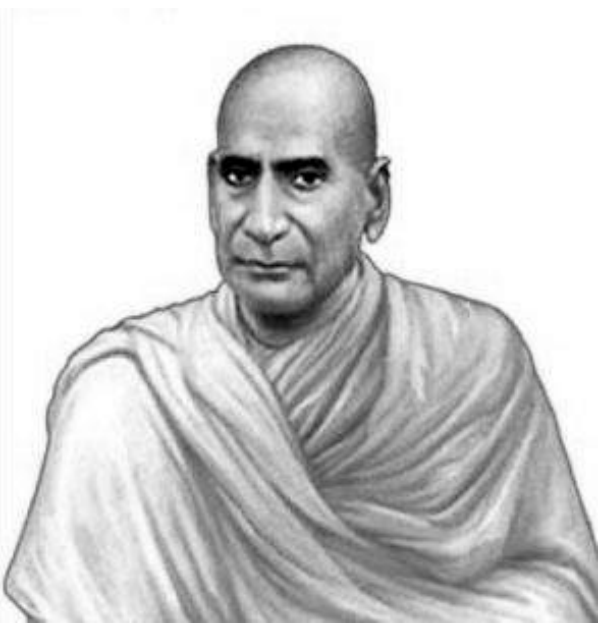

1 जिस समाज और देश में शिक्षक स्वयं चरित्रवान नहीं होते उसकी दशा अच्छी हो ही नहीं सकती। हमारे यहां टीचर हैं, प्रोफेसर हैं, उस्ताद है, मौलवी हैं पर आचार्य नहीं आचार्य अर्थात आचारवान व्यक्ति कीा इस देश को महती आवश्यकता है। चरित्रवान व्यक्तियों के अभाव में महान से महान तथा धनवान से धनवान राष्ट्र भी समाप्त हो जाते है।

2 समाजिक भेदभाव के कारण आज हमारे करोड़ों भाईयों के दिल टूटे हुये है। जातिवाद के कारण इन्हें काट कर दिया गया है। मैं आप सभी भाईयों बहनों से यह अपील करता हूं िकइस राष्ट्रीय मन्दिर में मातृभूमि के पगेम के पानी के साथ अपने दिलों को शुद्ध करें और वादा करें कि ये लाखो– करोड़ों अब हमारे लिये अछूत नहीं, बल्कि हमारे भाई बहन बनेंगे। अब उनके बेटे बेटियां हमारे स्कूलों में पढ़ेंगे, उनके पुरूष और महिलायें हमारे समाजों में भाग लेगें, आजादी की लड़ाई में कंधे से कधा लगाकर हमारे साथ खड़े होंगे। और हम सभी अपने राष्ट्र का पूर्णता का एहसास महसूस करने के लिये उन्हें छाती से लगायेंगे। छूआछूत ने इस देश की अनेक जटिलताओं को जन्म दिया है। मैं समझता हूं वैदिक वर्ण व्यवस्था द्वारा ही इस का अन्त सम्भव है।

अज्ञान, स्वार्थ, प्रलोभन या फिर उंची जाति के लोगों द्वारा अत्याचार किये जाने पर तंग आ कर जिन हमारे हिन्दु भाईयों ने अपना धर्म परिवर्तन किया है उनकी शुद्धि कर अपने धर्म समाज में उनको वापिस लाना परम आवश्यक है। अब तो यही इच्छा है कि दूसरा शरीर धारण कर शुद्धि के अधुरे काम को पूरा करूं।

3 हमारा यह कर्तव्य बनता है जिस देश में हमारा जन्म हुआ, जिस देश के पदार्थो का प्रयोग कर हम बड़े हुये उसकी उन्नती के लिये तन, मन धन से काम करें। श्रीराम का कार्य इस लिये सफल हुआ क्याकि उन्हें हनुमान जैसा सेवक मिला, स्वामी दयानन्द का काम अभी अधुरा है, वह तभी पूरा होगा जब हनुमान जैसे सेवक मिलेंगे और हमारे सभी कार्यो सत्य पर अधारित होगें स्मरण रखो यह संसार सत्य पर अधारित है। सत्य के बिना राजनिती धिक्कारने योग्य है। वही देश आगे जा रहें हैं जहां सत्य धर्म है।

पिछला वर्ष कम दुखदाई होता यदि भारत का नेता कोई समझदार व्यक्ति होता

सुख चैन पहली चीज है जो कि नागरिक चाहते है।

इस में कोई संदेह नहीं कि पिछला वर्ष सारे विश्व के लिये दर्द व दुख लेकर आया। कोई भी देश इस से नहीं बचा यहां तक कि चीन भी नहीं। परन्तु जहां तक भारत का प्रश्न है यह दर्द बहुत अधिक था और आज हम विचार करें तो निष्कर्श यही निकलेगा कि यदि भारत का प्रधानमन्त्री कोई समझदार व्यक्ति होता, जिस में अंहकार कम होता और दूसरों के साथ परामर्श करके , स्वार्थ से उपर उठ कर, छोटे व्यक्तियों के दर्द व अपेक्षाओं को समझने का गुण होता तो निश्चित तौर पर आम व्यक्ति को पहुंचने वाली पीड़ा कहीं कम होती।

मुझे महान व्यक्तियों द्वारा कही दो बातें सदैव याद रहती है

पहली बात महात्मा गांधीं ने कही थी–––जब हम किसी जिम्मेवार ओहदे पर काम करते हुये निर्णय लें तो सदा यह विचार करें कि कि यह समाज के छोटे वर्ग पर कैसे प्रभाव डालेगा।

दूसरी चाणक्य से जब यह प्रश्न पूछा गया कि आप भी तो योग्य हैं तो फिर चन्द्रगुप्त को राजा क्यों बनाना चाहते है, स्वयं क्यों नहीं बनते?

चाण्क्य ने कहा––––राजा सामाजिक जीवन जीने वाला, पत्नि, पुत्री व पुत्रों से सम्पन्न होना चाहिये , जिससे वह हर रिश्ते के दुख को समझ सके और जनता से सही व्यवहार कर सके।

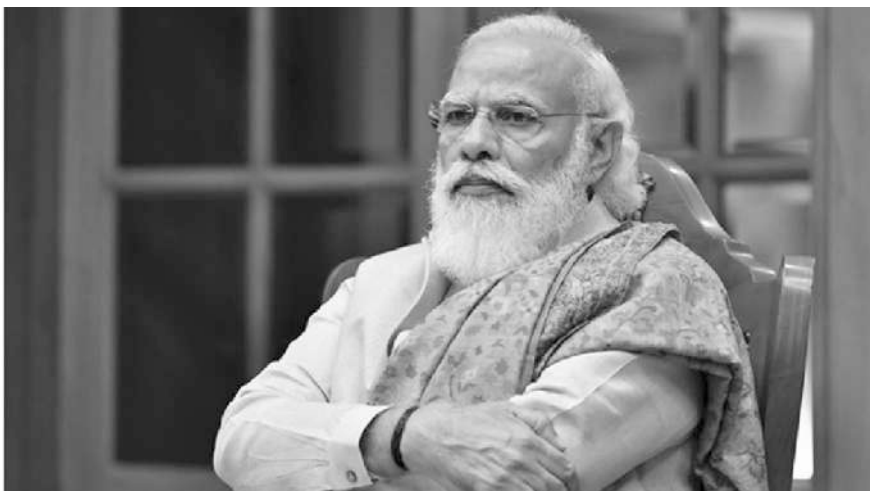

इस साल के प्रारम्भ से ही अर्थव्यवस्था बुझी बुझाी थी आवश्यकता थी उसे चिंगारी देने की परन्तु कोविड के भय में जो कदम उठाये गये उसने उसे बिल्कुल बुझा दिया। दुनिया का सब से सख्त लोक–डाउन चार घंटे के नोटिस पर लगा दिया गया जब कि हालात ऐसे नहीं थे कि इतने कम समय के नोटिस पर इतना सख्त लोक डाउन लगा दिया जाये। जो हुआ वह सब के सामने है, चार करोड़ के लगभग छोटे काम करने वाले व्यक्ति बेरोजगार हो गये। हजारों मजदूर सड़को पर ही मर गये। मेरा पूछना है कि यदि मध्यप्रदेश की सरकार को पलटने के लिये 10 दिन लोकडाउन आगे बड़ाया जा सकता है तो आम जनता को जो कि किसी भी कारण से घरों से बाहर थी, उन्हे घर पहुंचने के लिये एक हफते का समय क्यों नहीं दिया जा सकता। हम में अधि क इस विपरीत असर से न खबर इस लिये हैं कि हम आर्थिक दृष्टि से मजबूत, सरकारी मुलाजिम, पैंशन लेने वाले हैं परन्तु जो निजी सैक्टर में काम करते हैं जैसे की होटल, मनोरंजन, यातायात से जुड़े हुये, उनको आठ महीने बिना काम के रहना पड़ा। उनके घरों की हालत दयनिय हो गई। सच्चाई यह है कि उस समय भी सब कुछ वैसे ही चल सकता था जैसे आज चल रहा है। अर्थ व्यवस्था को तो हमने दुनिया भर के सभी देशों में सब से अधिक नुकसान पहुंचाया ही परन्तु कोविड को निपटने में भी हम ऐशिया द्वीप के देशों में सब से निकम्मे साबित हुये। हमारे यहां कोविड प्रभावित एक लाख में 11 व्यक्तियों की मौत हुई जब की पाकिस्तान व बंगलादेश में यह संख्या 4 है। कहने का अर्थ यह है कि हमने ऐसे कदम लिये जिस से अर्थव्यवस्था तो बिगड़ी ही परन्तु हम कोविड का मुकावला करने में भी विफल हुये।

अब बात करते हैं चीन के साथ सम्बन्धों की। 2014 जब से मोदी साहब ने कमान सम्भाली है चीन हर साल कहीं न कहीं से धुसपैठ करता है । चाहे मोदी साहब कुछ भी कहें देश का एक बड़े हिस्से पर चीन का कब्जा हो गया है जो कि वह छोड़ने वाला नहीं। जो

शक्तिशाली होता है उसके आगे झुकना ही पड़ता है, चाहे नेहरू हो या फिर मोदी। यह कह कर कि हमने चीन को मजा चख दिया, हम देश वासियों को कितना भी गुमराह कर ले परन्तु आज के समय में सच्चाई सामने आ ही जाती है और सच्चाई यही है कि गलवान में बहुत बड़ा भूमी का हिस्सा चीन ने अपने कब्जे में ले लिया है। परन्तु दुख इस बात है कि हमारे प्रधानमन्त्री ने अपने देश की जनता को सच्चाइ से दूर रख कर यही कहा कि हमारा एक भी इंच भूमी का टुकड़ा चीन के पास नहीं गया। आप भारत का मिडिया तो नियन्त्रित कर सकते हैं परन्तु सारे विश्व का नहीं।

सच्चाई यह है कि चीन इस समय तेजी से उभरती हुई दुनिया की सब से मजबूत अर्थव्यवस्था बन रही है, हमारे न मानने से या मिडिया का प्रयोग कर, हर सेमय गालियां देने से कुछ नहीं होगा। अच्छा होगा हम वैसा ही शक्तिशाली व निपुण देश बने जैसा की वह पिछले 40 वर्ष में बन गया। उनकी वस्तुओं के आयात को रोकने से काम नहीं चलेगा, जब हम ही इस कदर सक्ष्म हो जायें कि हमारा माल चीन से सस्ता और वेहतर हो, तो अपने आप ही आयात बन्द हो जायेगा और चीन देश की तरह निर्यात शुरू हो जायेगा। परन्तु उसके लिये एक ही बात की आवश्यकता है और वह है चरित्र जो कि वर्तमान राजनैजिक प्रणाली में सम्भव नहीं। केवल राम राम का जाप करने से या 1100 करोड़ का मन्दिर बनाने से चरित्र नहीं आ जाता। राम तो आपके अन्दर होना चाहिये।

सुख चैन पहली चीज है जो कि नागरिक चाहते है। पिछले वर्ष का एक भी दिन देश में शातिं का नहीं गुजरा। काविड से पहले नागरिकता को लेकर दंगे और झड़पें होती रही अब कोई उसका नाम नहीं ले रहा। कारण आसाम जो कि सब से अधिक प्रभावित है वहां पर चुनाव होने वाले हैं। हैरानगी की बात यह है कि जिस प्रांत की घुसपैठ को लेकर यह नागरिकता का मुदा देश व्यापी बना वहां जब प्रधानमन्त्री चुनावी सभा के लिये गये तो, इस डर से कि कही चुनाव में विपरीत उसर न पड़े, उसका नाम तक नहीं लिया।

कोविड जब ईश्वर की कृपा से प्राकृतिक तौर पर ही खत्म होले लगा तो किसान अन्दोलन आरम्भ हो गया। यह अन्दोलन इस लिये हुआ क्योकिं इतने बड़े मुददे को बिना किसी सलाह मशवरे के देश पर थोपा गया।

एक बात स्पष्ट है कि यह सभी विषय एक भयंकर रूप न लेते यदि निर्णय लेने वाले ने सलाहमशवरा किया होता, स्वेदनशीलता दिखाई होती और गरीबों के बारे में भी सोचा होता।

जो भाजपा के लोग यह सोचते हैं कि चाहे कुछ भी होता रहे, मोदी जी उनको सतता का सुख तो दिलाते ही रहेंगे यह भूल रहें हैं कि ईन्दिरा गाांधी के समय कांग्रेसी भी ऐसा ही सोचा करते थे। भाजपा के पास तो 307 सीटे हैं इन्द्रिरा गाांधी के पास 1983 में 373 थी परन्तु अंहकार के कारण सब बदल गया। इस में कोई बड़ी बात नहीं मोदी साहब का यह अंहकार भाजपा को ही ले डूबे। कांग्रेस में तो यदा कदा विद्रोह की बात कोई न कोई नेता कर देता था परन्तु भाजपा में तो मोदी साहब को छोड़ कर सभी नेताओं ने न बोलने की शपथ ले ली है। सता के मोह में यह चुपी विनाशकारी हो सकती है।

✪☆✪

हम अपने मूल्य को कैसे जाने

संसार में तीन चीजें बहुत मूल्यवान हैं क्योंकि यह प्रभु की कृपा के बिना प्राप्त नहीं होती। पहली है मानव का चोला, दूसरा निर्भय होना और पूर्ण रूप से अपने आप को स्वतन्त्र महसूस करना व तीसरा जीवन मे दिशा देने वाला ज्ञान वान गुरू। इन में पहली चीज––अर्थात मानव का चोला, मिलने का प्रयोजन भी असफल हो जाता है जब तक उसके पास बाकी दो चीजें नहीं होती।

एक बार गुरू नानक देव के चेले ने उनसे पूछा कि मानव जीवन का मूल्य क्या है। गुरू नानक देव ने उसे समझाने के लिये उसे एक बहू मूल्य हीरा दिया और कहा कि वह पता कर के आये कि इसका मूल्य क्या है।

चेला हीरा लेकर बाजार में चला गया और अलग अलग दुकानदारों को दिखाने लगा। पहले वह फल बेचने वाले के पास गया।––––– हे भाई इस हीरे के बदले तुम मुझे कितने पैसे दे सकते हो। फल वाले ने कहा कि मैं तुमहें इस के बदले में तीन सेब दे दूंगा। उसके बाद वह हीरे को सबजी बेलने वाले के पास ले गया।–––––––मैं तुम्हें हीरे के बदले पांच किलो टमाटर दूंगा सबजी वाले ने कहा। दूर से जब किसी ने देखा कि वह मूर्ख हीरे की कीमत का मूलयांकन सबजी और फल बेलने वाले से करवा रहा है, तो

उसने उसे अपने पास बुलाकर कहा––– हे भाई हीरे की कीमत का सही मूलयांन फल वाला या सबजी वाला नहीं कर सकता। इसके लिये तुम्हें जोहरियों के पास जाना चाहिये।

पहले जोहरी ने हीरे की कीमत 20000 रूपयें आंकी, दूसरे ने 30000 और फिर एक ने 50000 हजार। इस से वह और भी असमंजस में पड़ गया और उसी व्यक्ति के पास फिर से गया। उसने उसे एक खास जोहरी का नाम सुझाया जो कि न केवल शहर का सब से बड़ा जोहरी था बल्की अच्छे आचरण के लिये भी जाना जाता था––––वह तुम्हें गलत नहीं बतायेगा। उसके बाद तुमहें किसी और के पास जाने की जरूरत नहीं होगी।

जब उस व्यक्ति ने वह हीरा उस जोहरी को दिखाया तो वह जोहरी उसे देखकर हैरान रह गया और उस व्यक्ति से बोला–––––इस हीरे को कभी न बेचना, इसकी कोई कीमत नहीं है। यह अमूल्य है। उस व्यक्ति ने आकर जब यह गुरू नानक देव को बतलाया तो वह बोले––––मनुष्य जीवन भी इस अमूल्य हीरे की तरह है। है तो यह अमुल्य पर बहुत कम लोग इस क सही मूल्य को आंक पाते है।

जब 1,86,000 योनियों की बात की जाती है और यह कहा जाता है कि मनुष्य जीवन इतनी योनियों से गुजरने के बाद ही प्राप्त होता है, तो यह इस बात का ही सेकेत देता है कि मनुष्य जीवन कितना अमूल्य है।

जब इस बात को जान लिया कि मनुष्य जीवन इतना अमूल्य है और मृत्यु भी अवश्य है। जिसका भी जन्म हुआ है वह मृत्यु को भी अवश्य प्राप्त होगा। यानी कि हर व्यक्ति के पास इस अमुल्य मानव जीवन के सही प्रयोग का बहुत थोड़ा समय है। एक दिन गुजर गया तो जीवन का एक दिन खत्म हो गया, और देखते ही देखते मानव बचपन से बुढ़ापे में प्रवेश कर जाता है। जिन्होने जीवन को वेदों में बताये मार्ग के अनुसार जीया होता है उनके चेहरे पर अन्तिम समय में सन्तोष होता है वह मृत्यु को जीवन का सत्य जानकर चूमते है। परन्तु जिन्होने जीवन के मूल्य को नहीं समझा होता और इसका सही प्रयोग नहीं करते वह पश्चाताप में दुखी होते हैं पर उस समय पश्चाताप करने का कोई फायदा नहीं होता। शरीर शिथिल हो चुका होता है। व्यक्ति चाह कर भी कुछ करने में बेबस होता है। मृत्यु का भय हर पल अन्हें सताता है।

तो क्यों न इस जीवन के हर ऐक क्षण का सही प्रयोग किया जाये। यह तभी सम्भव है जब मनुष्य धर्म के रास्ते पर चले। धर्म का मार्ग वह है जो सत्य और न्याय का आचरण करवाता है। इस के मुख्य लक्ष्ण हैं सत्य बोलना, सद्व्यवहार करना, धैर्य, सहनशीलता, किसी से द्वेष, ईर्ष्या व घृणा न करना, परोपकार करना, कृत्ज्ञ होना अपने काम को ऐसे करना जिससे दूसरों को सुख पहुंचें आदि।

धर्म द्वारा अर्थ अर्थात धन और ऐश्वर्य की प्राप्ती करे। और ऐसे धन से ही भोगों का सेवन करे । अर्थात धर्म द्वारा प्राप्त धन से ही जीवन निर्वाह करे

जब वह ऐसा करेगा तो उसके लिये मोक्ष–– जो दुखों से छुड़ाकर कर सदैव आनन्द में रखता है, की प्राप्ती अवश्य होगी। यही है जीवन के मुल्य को समझना और उसे ठीक ढंग से जीना।

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म् ।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

MR M.L.GUPTA DISTRIBUTED BANANA AND MILK IN MEMORY OF HIS PARENTS

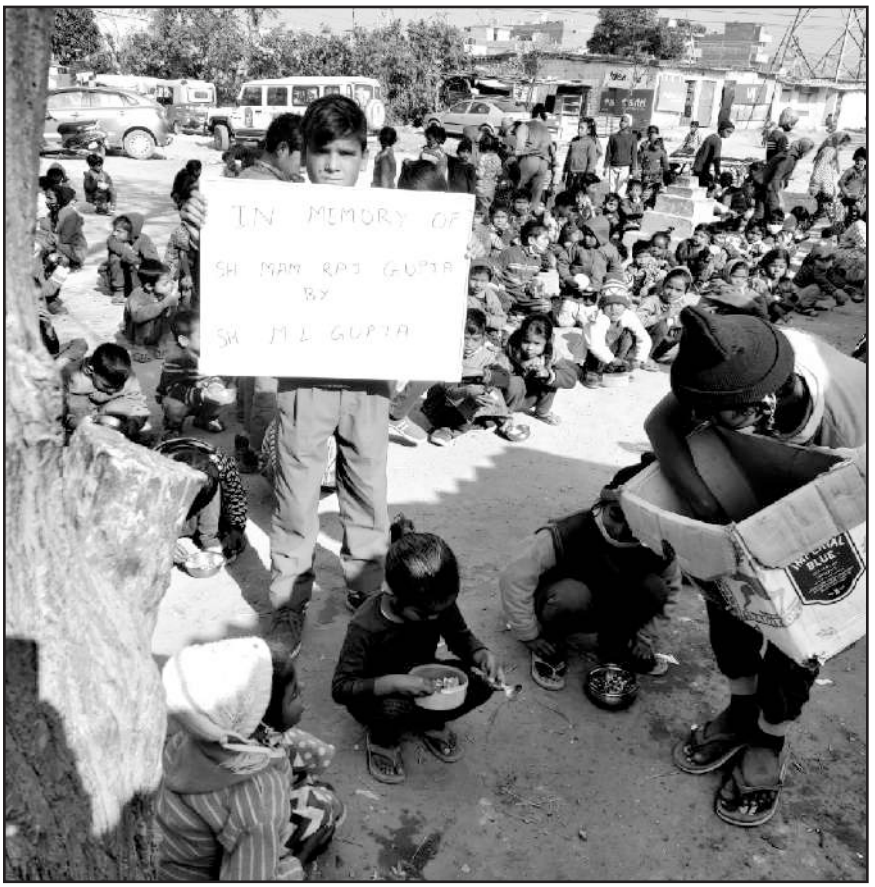

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

All donations to this organization are exempted under section 80G

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552,
Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

MADHU SOOD

MR AVANI GUPTA

MR MUKESH GUPTA

PANKAJ KAPOOR

SARLA

SURYA S NATH

Mrs Vinod Bala donated ration to bal Ashram

Shalini Nagpal D/o Dr Saroj Miglani performing Havan with the children

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870